International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI)
Vol-5, Issue-11, 2020 | ISSN: 2581-6829, http://www.edusanchar.com

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. दीपा आचार्य
एलबर्ट आइंस्टीन महिला शिक्षक
प्रशिक्षण महाविद्यालय, बसंत बिहार, कोटा

नवीन शर्मा
शोधार्थी पीएच.डी. (शिक्षा)
केरियर पांइट यूनिवर्सिटी, कोटा

सारांश –

प्रस्तुत शोध में शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया है। जिसमें शोधार्थी को प्राप्त हुआ कि सहशिक्षा शिक्षा शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों तथा महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों दोनों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता लगभग समान है इसलिए वहाँ के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा व उपलब्धि भी समान ही रहती है, परन्तु महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, सहशिक्षा शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक पाई गई तथा इसमें देखा गया कि शिक्षकों की शिक्षण दक्षता विद्यार्थी की उपलब्धि अभिप्रेरणा व सृजनात्मकता को बहुत प्रभावित करती है। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण दक्षता उच्च कोटि की होनी चाहिए।

मुख्य शब्द –

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान, वह घर या स्थान जहाँ शिक्षित किया जाता है।

1. **प्रशिक्षण** – वह स्थान या संस्थान जहाँ कुशलतापूर्वक किसी व्यवसाय कला, खेल आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है अर्थात् जहाँ शिक्षा का प्रशिक्षण कुशल व भावी अध्यापक को दक्षता प्राप्त करवाने के लिए दिया जाता है।

2. **शिक्षक** – गुरु का शाब्दिक होता है सम्पूर्ण। जो विद्यार्थी को जीवन की सम्पूर्णता हासिल करने की दिशा में बढ़ने के लिए मार्ग प्रदशस्त करें तथा उसकी उपलब्धि, अभिप्रेरणा व सृजनात्मकता को निखारे।
3. **शिक्षण–दक्षता** – शिक्षण–दक्षता से तात्पर्य एक ऐसे शिक्षक से है जो विद्यार्थी को उनकी कार्यक्षमता के अनुसार शिक्षा देकर विद्यार्थी के व्यवहार को परिमार्जित करने की योग्यता रखता हो।
4. **विद्यार्थी** – छात्र शिक्षार्थी, ज्ञान–पिपासु। वह बालक जो किसी शिक्षा संस्थान में अध्ययन करता है। किसी न किसी विषय को जानने, सीखने के लिए लालायित व प्रयत्नशील रहता है।
5. **शैक्षिक उपलब्धि** – उपलब्धि वह है जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कोशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकें।
6. **अभिप्रेरणा** – लक्ष्य आधारित व्यवहार का उत्प्रेरण या उर्जाकरण है, अभिप्रेरण आन्तरिक व बाह्य दोनों होती है।
7. **सृजनात्मकता** – सृजनात्मकता एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें नये विचार, उपाय व संकल्पना का जन्म होता है।

शिक्षक, शिक्षार्थी में सृजनात्मकता का विकास करने का कार्य करता है।

प्रस्तावना–

शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य है आत्म–ज्ञान (Self-Knowleoge) यानि शिक्षा खुद को खोजने, खुद की सच्चाई जानने की एक निरन्तर प्रक्रिया बने। इसके लिए बच्चों को विभिन्न तरह के अनुभवों का अवसर देकर इस प्रक्रिया को सुगम बनाने की बात एनसीएफ में कहीं गई है।

शिक्षा का अर्थ बस किताबों में लिखें तथ्य और विचारों को याद करने तक सीमित नहीं है जो हम कुछ समय बाद भूल जाते है, बल्कि उनके पीछे छिपे सिद्धान्त को शिक्षा कहते है जो हमें एक अच्छे शिक्षक से प्राप्त होती है।

शिक्षा उस मार्ग की तरह होता है जो स्वयं स्थिर होते हुए विद्यार्थी को उसके लक्ष्य तक पहुँचा देता है। शिक्षा महज स्कूल में पड़ी किताबों की कहानी नहीं है। शिक्षा को हर वो सीख है जो हम जीवन में सीखते है। शिक्षा सिर्फ कागज के पन्नों से ही नहीं मिलती, बल्कि जीवन के हर पहलू से शिक्षा का जुड़ाव होता है।

अध्यापक के प्रदर्शन को बेहत्तर और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि एक अच्छे शिक्षक, मार्गदर्शक का होना।

शिक्षक क्या है ?

शि – शिखर तक ले जाने वाला।

क्ष – क्षमा की भावना रखने वाला।

क – कमजोरी दूर करने वाला।

अर्थात् –

जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है और उसकी हर कमजोरी दूर कर उसको शिखर (सफलता) तक ले जाए।

विश्वभर के शिक्षाविदों का यह मानना है कि मात्र शिक्षक ही शिक्षा का समाधान नहीं है इसमें भी अधिक महत्वपूर्ण है कि शिक्षक, शिक्षण कला में निपुण कार्यकुशल, अच्छा ज्ञान, उचित एवं नवीन दृष्टिकोण हों।

शिक्षक कार्यकुशल एवं प्रभावशाली तभी हो सकता है जब उसमें शैक्षिक दक्षता हो।

दक्षता का अभिप्राय –

व्यावसायिक योग्यता, जिसमें अर्जित ज्ञान एवं उच्च स्तर की अवधारणा प्रस्तुत करने की योग्यता शामिल है। दक्षता का अर्थ है छात्रों को कार्यकुशलता और संरक्षण का सम्यक् ज्ञान देना।

शिक्षण एवं अध्ययन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बहुत से कारक शामिल होते है। सिखाने वाला जिन तरीकों से ज्ञान को प्रवाहित करता है, सीखने वाला उन्हीं तरीकों से लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए नया ज्ञान, आचार व कौशल को समाहित करता हुआ नये अनुभवों को ग्रहण करता हैं।

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा देने वाले शिक्षक बहुत सी शिक्षण–दक्षता में परिपूर्ण होते है। जैसे – ज्ञानात्मक शिक्षण, रचनात्मक शिक्षण, अनुभवात्मक शिक्षण आदि।

इन शिक्षण दक्ष शिक्षकों के द्वारा दिये गए ज्ञान से विद्यार्थियों की उपलब्धि व सृजनात्मकता में उत्कृष्ट परिवर्तन आता है जो उनके भावी जीवन को उज्ज्वल बनाता है।

शिक्षक का महत्व –

कैरियर और बिजनस में सफल होने के लिए शिक्षक हमारे जीवन में अहम भूमिका निभाते है। एक अच्छा शिक्षक समाज में अच्छे इंसान बनने और देश के अच्छे नागरिक बनने में हमारी मदद करता है क्योंकि अध्यापक ही जानते है कि विद्यार्थी किसी भी देश का भविष्य है। किसी भी देश के भविष्य का विकास शिक्षकों के हाथ में हैं। इसलिए शिक्षकों की सराहना बहुत जरूरी है इसलिए भारत में हर साल 5 सितम्बर को हम शिक्षक दिवस मनाते हैं।

शिक्षा की सफलता के लिए यह परमावश्यक है कि विद्यार्थियों के मन में अपने शिक्षकों के प्रति प्रेम और आदर का भाव हो। शिक्षा का स्तर तभी ऊँचा हो सकता है जब अध्यापक स्वयं अपने को आदर का पात्र बनाए।

शिक्षा वही है जिससे मनुष्य जीवन के हर पहलू का विकास और उत्थान कर सके, दूसरे शब्दों में कहे तो उत्तरम शिक्षा वहीं है जो विद्यार्थियों ज्ञानवान

बनाने के साथ–साथ स्वधर्म का पाठ सिखाए। शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार, ''शिक्षा सूचना प्रदान करने व कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है इसे शिक्षित व्यक्ति को मूल्यों का विचार भी प्रदान करना है वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक है अतः जिस समुदाय में वे रहते है। उस समुदाय के प्रति उनका भी सामाजिक उत्तरदायित्व है।''

शिक्षा की प्रक्रिया एक त्रियामी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण, प्रशिक्षण तथा अनुदेशन शामिल हैं।

उद्देश्य –

1. सहशिक्षा व महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता का अध्ययन करना।
2. सहशिक्षा व महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. सहशिक्षा व महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
4. सहशिक्षा व महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. सहशिक्षा महाविद्यालय व महिला महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सहशिक्षा महाविद्यालय व महिला महाविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. सहशिक्षा महाविद्यालय व महिला महाविद्यालय के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. सहशिक्षा महाविद्यालय व महिला महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन –

इस अध्ययन के लिए शोधार्थी ने कोटा शहर के सहशिक्षा व महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों का चयन किया गया।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि व घटनोत्तर विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –

सौउद्देश्य यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के द्वारा सहशिक्षा व महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के 100 शिक्षकों तथा 1000 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण –

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली, उपलब्धि परिणाम, सृजनात्मकता मापन के लिए K.N. शर्मा द्वारा विकसित DPA-S द्वारा उपकरण तथा सीमा संघाई विकसित अभिप्रेरणा NPS-SS उपकरण का प्रयोग किया।

सारणी 1

चर/समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	t-value
सहशिक्षा महाविद्यालय	50	116.38	26.61	0.347
महिला महाविद्यालय	50	114.60	24.59	

निष्कर्ष –

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक चाहे वह सहशिक्षा महाविद्यालय के हो चाहे महिला महाविद्यालय के उनकी शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2

चर/समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	t-value
सहशिक्षा महाविद्यालय	200	71.55	14.29	1.045
महिला महाविद्यालय	200	72.76	12.63	

निष्कर्ष –

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 3

चर/समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	t-value
सहशिक्षा महाविद्यालय	200	20.15	5.14	0.771
महिला महाविद्यालय	200	19.75	5.10	

निष्कर्ष –

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के सहशिक्षा महाविद्यालय व महिला महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 4

चर/समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	t-value
सहशिक्षा महाविद्यालय	200	77.03	8.57	1.498
महिला महाविद्यालय	200	78.30	8.32	

निष्कर्ष –

शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता का सहशिक्षा महाविद्यालय व महिला महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर होता है।

सुझाव –

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में भावी शिक्षकों को विद्यार्थियों को एक योग्य, ज्ञानवान, सक्षम तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिए शिक्षक में शिक्षण दक्षता को प्रभावी रूप से उसका दक्षता को निखारना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. Shingh, Virjesh (27 April 2017), ''शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य क्या है।'' Education Mirror 4 जनवरी 2017
2. Education Mirror (4 जनवरी 2017), ''शिक्षक का अधिशैक्षिक शोध व विमर्श का एक साझा मंचा।
3. मिश्र, अरूण कुमार एवं अवस्था, दिलीप कुमार (April, 2010), "दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा'' शिक्षा विभाग कोर्ट इस्टीट्यूअ ऑफ टेक्नोलॉजी, मेरठ।
4. खान जमेशद (2019), ''हमारे जीवन में शिक्षक का महत्व'' support me India.
5. सिंह, पी.डी. (सितम्बर, 2017), ''शिक्षा क्या और कैसी हो ?'' शिविरा पत्रिका सितम्बर 2017, पृ. 31
6. शर्मा, आर.ए. (2005), ''शिक्षा के तकनीकी आधार, पृ. 2–3
7. शर्मा आर.ए. (2005), ''शिक्षा के तकनीकी आधार पृ. 6–7
8. पालीवाल, लोकेश कुमार (जनवरी, 2019), ''व्यवहारगत परिवर्तनों से अलगाँव'' शिविरा पत्रिका 2 जनवरी 2019 पृ. 18
9. प्रधान, प्रवीण (2019), ''शिक्षण का अर्थ और परिभाषा @ Hindimerijaan.com 10 अप्रैल 2019